Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(3), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह के नाटकों में सामाजिक यथार्थ

डॉ. रमेश यादव

राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह जिस प्रकार अपने लेखन की शुरुआत कहानियों से करते हैं, ठीक उसी प्रकार उन्होंने उपन्यास एवं नाटक का लेखन भी अपने प्रारंभिक दौर में ही प्रारंभ कर दिया था। लेकिन इन्हें भी सफलता प्रेमचंद की तरह सिर्फ कहानी और उपन्यास में ही मिली । राधिकारमण प्रसाद सिंह की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अपने समय की नब्ज़ को अपने साहित्य में पकड़ कर रखा है, जिस प्रकार उनकी कहानियां अपने समाज, परिवेश के सच को लेकर लिखी गई हैं , उसी प्रकार इनके नाटक भी अपने समाज, अपने परिवेश के सच को दिखाते हैं। इनकी अधिकांश कहानियां एवं कुछ उपन्यास, इनके जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित हैं। रचनाकार की सफलता इसी में है कि वह समाज के सच को साहित्यिक विधा में डाल दें, ध्यान सिर्फ यह रहे कि वह घटना का वर्णन मात्र न रहे । राधिका रमण प्रसाद सिंह समाज के सच को, साहित्यिक रूप देने में पूर्णतः सफल हुए हैं। इस शोध-पत्र में मैं राधिकारमण प्रसाद सिंह द्वारा लिखित चार नाटकों की समीक्षा करने का प्रयास करूंगा।

राधिकारमण प्रसाद सिंह का पहला नाटक 'नए रिफॉर्मर' , जो लगभग 1910 ई में लिखा गया था। "1910 की बात है। मुड़ आए हम म्योर सेंट्रल कालेज में। सर गंगानाथ झा के घर सरस्वती पूजा के अवसर पर एक दिलचस्प नाटक खेलने की चर्चा छिड़ी। यह जिम्मेदारी हमारे सिर पर आई। हमारी लेखनी यह जिम्मेदारी उठाने को कमर कस खड़ी हो गई। फिर क्या, चार-पांच दिनों के अंदर ही बन संवर गया वह , नाम रहा नये रिफार्मर (नवीन सुधारक)।"1 इसमें राधिकारमण प्रसाद सिंह ने नाटक के मुख्य पात्र रमेश के माध्यम से तत्कालीन युवा पीढ़ी के भटकाव को दिखाया है. रमेश जो युवा है, जिसके पिता परंपरावादी हैं, आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बाद भी वे रमेश को पढ़ने के लिए काशी भेजते हैं। काशी में रमेश जाता तो है पढ़ने के लिए, लेकिन कुसंग में पड़कर दिशाहीन हो जाता है। यह 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर की हमारी युवा पीढ़ी है, जो अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव में आकर अपनी प्राचीन भारतीय रुढियों को तोड़ने का प्रयास तो करती है, लेकिन सामाजिक रुढ़ियों को तोड़ने को तैयार युवा खुद भटकाव के शिकार हो जाते हैं। इसके पीछे भविष्य की सही दृष्टि का न होना मुख्य वजह है। हमारी युवा पीढ़ी बड़े असमंजस में रहती है ,न तो वह आधुनिकता को पूर्ण रूपेण अपना पाती है और न ही अपनी परंपरा को पूरी तरह से छोड़ पाती है। इसी विषय को आधार बनाकर राधिकारमण प्रसाद सिंह ने नए रिफॉर्मर नाटक का सृजन किया है। इस नाटक में रमेश हर उस बुराई का शिकार हो जाता है, जिस बुराई से आधुनिक युवा पीड़ित हैं, जैसे नशाखोरी, शराब खोरी, जुआ एवं अड्डे बाजी, सब कुछ, वे सारे दुर्गुण रमेश के अंदर आ जाते हैं, लेकिन रमेश बातें बहुत लंबी-लंबी करता है। वह समाज सुधार की बात तो करता है, लेकिन रोज़ शाम को अपने

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(3), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

रूम में दोस्तों के साथ शराब पीता है और आधुनिकता की बात करता है। नाटक के एक संवाद में रमेश अपने दोस्तों से कहता है कि " ओ Fully ! क्या बकता है, हजारों आदमी के सामने नहाना क्या ही बेहूदा हरक़त है ? जहां औरतें बेपर्दगी से नहाती हैं, वहां कौन शरीफ़ आदमी जा सकता है" । 2 दरअसल 19 वीं शताब्दी के अंत और 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर में भारत में समाज सुधार के कई आंदोलन चलाए गए। आर्य समाज, ब्रह्म समाज, द्वारा चलाए गए सामाजिक आंदोलनों का प्रभाव समाज पर पड़ रहा था। साथ ही साथ अंग्रेजी शिक्षा और उसकी आधुनिकता का प्रभाव भी हमारी युवा पीढ़ी पर पड़ रहा था। रमेश उन्हीं आंदोलन और अंग्रेजी शिक्षा पद्धति की उपज है। कहीं ना कहीं रमेश एवं उसके दोस्त अपने समाज के भटके हुए लोग हैं, जिन्हें सही अर्थों में यही पता नहीं है कि उन्हें करना क्या है ? समाज का सही रूप से सुधार कैसे किया जा सकता है ? आधुनिकता का ढोंग करने से और परंपरा को गाली देने से हमारी आधुनिकता नहीं दिखती है, आधुनिकता का मतलब है परम्परा और आधुनिकता में सामंजस्य, एवं बेहतर भविष्य दृष्टि। लेकिन रमेश जैसे लोग भ्रमित लोग हैं, जिन्हें न परंपरा की समझ है और न आधुनिकता की। जो परिवार, समाज से झूठ बोलते हैं। अपने ही परिवार और समाज को धोखा देते हैं। नये रिफार्मर नाटक में रमेश कहता है " अभी बहुत Reform करना है। अरे बेवकूफ। उन मोटे ताजे Illiterate मूर्ख पाण्डों के घर रूपैया फूंकने से क्या फायदा ? " 3 रमेश की ये बातें तो सही हैं, उस दौर में समाज में बहुत सी कुरीतियां थीं, जिनका खत्म होना जरूरी था, लेकिन एक कुरीत को खत्म करने का नाटक करते हुए दूसरी बुराईयों का शिकार हो जाना गलत है । नाटक में रमेश शराब और जुए में खूब पैसा बर्बाद करता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि राधिकारमण प्रसाद सिंह द्वारा लिखित यह नाटक अपने लक्ष्य को साधने में सफल हो गया है। उस दौर के युवाओं का यथार्थ चित्रण इस नाटक में किया गया है।

भारत में सांप्रदायिकता की समस्या अंग्रेजों की देन है। बांटों और राज करो की नीति ने अंग्रेजों को लंबे समय तक भारत में ठहरने का मौका दिया। अंग्रेजों की इस ख़तरनाक नीति का परिणाम भारत आज तक भुगत रहा है। अंग्रेज समझ गए थे कि अगर भारत में लंबे समय तक शासन करना है तो यहां हिन्दू और मुसलमान दोनों के बीच दरार पैदा करनी होगी। अंग्रेजों ने यही किया, जिसका परिणाम भारत और पाकिस्तान का धर्म के आधार पर विभाजन है। आजादी के बाद भारत धर्म के आधार पर दो हिस्सों में बांट दिया गया। विभाजन के दौरान दोनों तरफ़ नरसंहार हुआ। उधर हिन्दू मारे गए और इधर मुसलमान मारे गए। इसी सांप्रदायिक हिंसा को आधार बनाकर राधिकारमण प्रसाद सिंह का दूसरा नाटक 'धर्म की धूरी' 1953 ई. में लिखा गया।

नाटक के मुख्य पात्र संतसरन दास जी हैं। वे मंदिर के मुख्य पुजारी हैं और समाज में सभी धर्मों को जोड़ने का उपदेश देते हैं। इनकी नजर में राम, अल्लाह और गॉड में कोई अंतर नहीं है। लेकिन अचानक एक दिन क्षेत्र में सांप्रदायिक हिंसा फैली जाती है। हिन्दू बहुल क्षेत्रों में मुसलमान मारे जा रहे हैं और मुसलमान बहुल क्षेत्रों में हिन्दू मारे जा रहे हैं। मठ के पड़ोस में रहने वाला अहमद, जिसके सिले हुए कपड़े वर्षों से मंदिर के देवताओं को चढ़ाया जा रहा है, आज सांप्रदायिक तत्वों से घिर गया था, जिसे संतसरन दास ने

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(3), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

अपने मंदिर में शरण देकर उसके प्राण की रक्षा किया। हांलांकि इस कार्य के लिए जहां संत जी का सम्मान होना चाहिए, वहीं हिन्दुओं द्वारा उनका विरोध किया गया। दूसरी तरफ एक हिन्दू महिला कमला मुस्लिम बस्ती में फंस जाती है। जिसके साथ मुसलमान ग़लत काम करते हैं। जब किसी तरह वह अपनी जान बचाकर अपनी बस्ती में पहुंचती है तो उसके ही सगे संबंधी उसे अपवित्र कह कर उसे अस्वीकार करते हैं। किसी तरह जब संत सरनदास का शिष्य मुकुंद कमला को मंदिर में शरण दिलाता है तो तमाम विरोध के बाद महंत जी कमला का विवाह मुकुंद से करा देते हैं। फिर दोनों समाज, हिन्दूओं और मुसलमानों के बीच फैले सांप्रदायिक वैमनस्य को दूर करते हैं। फिर दोनों समाज के लोग मिल जाते हैं । राधिकारमण प्रसाद सिंह का यह नाटक तत्कालीन समाज में फैली रहे सांप्रदायिकता को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

राधिका रमण प्रसाद सिंह का तीसरा नाटक 'अपना-पराया' 1953 में प्रकाशित हुआ था। 1953 आते-आते हिंदी नाटक काफी विकास कर चुका था, भारत-पाकिस्तान के विभाजन के बाद भारत में सांप्रदायिकता अपने चरम पर थी। राधिकारमण प्रसाद सिंह का तीसरा नाटक अपना-पराया भी सांप्रदायिकता को विषय बनाकर ही लिखा गया है। इस नाटक में राधिकारमण प्रसाद सिंह ने दिखाया है कि व्यक्तित्व के निर्माण में परिवेश और परिस्थितियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। व्यक्ति के संस्कार, उसका व्यवहार, उसका आचरण उसके परिवेश का परिणाम होता है। नाटक का पात्र रणवीर जो की एक मुसलमान का संतान है, हिंदू संस्कारों में पलकर अपनी बहन मीरा की इज्जत बचाता है , वहीं गुलाब जो की मूल रूप से सुरेश का पुत्र है, मुस्लिम परिवेश में रहकर सांप्रदायिकता की आग में इतना जलने लगता है कि अपनी ही बहन मीरा की इज्जत लूटने का प्रयास करता है। इससे यह बात साफ हो जाती है कि किसी भी व्यक्ति के वैचारिक और व्यावहारिक निर्माण में उसके समाज की मुख्य भूमिका होती है। व्यक्ति वही बनता है जो, वह अपने समाज में देखता है। सच ही कहा गया है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है । हमें जो समाज, जो परिवेश जो वातावरण मिलता है, हमारी सोच, हमारा व्यवहार उसी परिवेश के अनुसार बनता है। इसलिए निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में उसके परिवेश की, उसके वातावरण की, उसके संस्कार की, उसके पारिवारिक पृष्ठभूमि की मुख्य भूमिका होती है।

राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह का चौथा और अंतिम नाटक 'नज़र बदली - बदल गए नजारे' सन् 1961 ई. में प्रकाशित हुआ था। इस समय तक वातावरण और नाटकीयता सभी दृष्टिकोणों से हिंदी नाटक अपने ऊंचाई पर था। नाटक अपने प्रारंभिक दौर से ही यथार्थवादी विधा रहा है । राधिकारमण प्रसाद सिंह का यह नाटक इसे प्रमाणित करता है।

इस नाटक के माध्यम से लेखक ने भारतीय समाज में सदियों से व्याप्त सामंतवादी व्यवस्था पर गहरी चोट किया है। 1947 ई. में मिली आज़ादी और 1950 में लागू भारतीय संविधान ने भारत की सामाजिक संरचना में अमूल चूल परिवर्तन कर दिया था। राधिकारमण प्रसाद सिंह का यह नाटक इसी बदलाव का साक्ष्य है। नाटक की शुरुआत देवराम हरिजन के यहां से होती है। देवराम एक गरीब हरिजन है,

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(3), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

जिसके दो पुत्र हैं। बड़े पुत्र की बहू घर में आने वाली है, लेकिन घर के नाम पर एक छोटा सा छप्पर है, देवराम गांव के जमींदर ठाकुर सरदार सिंह से कुछ जमीन मांगने उनकी हवेली जाता है। ठाकुर साहब अपनी व्यस्तता की वजह से देवराम से मिल नहीं पाते हैं, और देवराम वापस चला जाता है। एक दिन अचानक ठाकुर सरदार सिंह शिकार खेलते हुए देवराम की झोपड़ी के बगल से गुजर रहे होते हैं।

देवराम ठाकुर साहब से एक कट्ठा जमीन मांगता है, घर बनवाने के लिए, ठाकुर साहब दीवान को आदेश देते हैं कि देवराम को कुछ जमीन दे दिया जाए । लेकिन देवराम को जमीन नहीं मिलती है। दीवान ने देवराम को थप्पड़ मार कर के भगा दिया।

आजादी के बाद भारत की सामाजिक संरचना बदलती है, समय, समाज और परिस्थितियां बदलती हैं । गांव में सरपंच की सीट हरिजन कोटा में चली जाती है। सीट हरिजन कोटा में जाने के बाद दलित देवराम सरपंच का चुनाव लड़ता है। गांव के दलितों की मदद से वह सरपंच चुना जाता है, अब देवराम की जान पहचान कलेक्टर से लेकर के बड़े-बड़े मंत्री तक हो जाती है। एक दिन देवराम के घर एक मंत्री आता है। ठाकुर साहब देवराम से सिफारिश करते हैं कि मंत्री को ठाकुर साहब के घर बुलाया जाए, लेकिन यह तभी संभव हो सकता था जब देवराम चाहे, जो ठाकुर पहले देवराम पर ध्यान नहीं देता था, वही ठाकुर अब देवराम की जी हुजूरी करते हुए नजर आता है। जो दीवान एक कट्ठा जमीन मांगने पर देवराम को चांटा मार देता है , वही दीवान अब देवराम की जी हुजूरी करता है। जो ब्राह्मण देवराम को इज्जत नहीं देता था, वही ब्राह्मण अपने बच्चों की नौकरी के लिए देवराम के घर में रसोईयां का काम करता है । नाटक में एक जगह दिवान कहता है -"हां ठाकुर कैसे दिन आ गए, अब ये डोम-चमार भी कुर्सियों पर बैठेंगे क्या ? "4 दिवान की यह सोच वर्षों की सामंती सोच है, जो धीरे-धीरे भारतीय संविधान के लागू होने के बाद टूट रही है ।

इस तरह हम देखते हैं कि राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह ने अपने इस नाटक के माध्यम से आजादी के बाद बदलते भारतीय ग्रामीण परिवेश को बड़ी संजीदगी से चित्रित किया है। जो दलित समाज आजादी से पहले कीड़े मकोड़े की जिंदगी जी रहा था। समाज में इज्जत नहीं थी। वही दलित, समाज में आरक्षण की वजह से अच्छे पद पर पहुंच जा रहा है। समाज में इज्जत से जी रहा है और यह सब कुछ संभव हुआ डॉक्टर साहब भीमराव अंबेडकर के द्वारा लिखित संविधान के द्वारा। अगर भारतीय संविधान लागू न होता तो आज भी देवराम किसी सामंत के यहां मजदूरी करता और दो वक्त की रोटी के लिए तरसता रहता, लेकिन जैसे ही आरक्षण के कारण, क्षेत्र की सीट दलित कोटे में चली जाती है, देवराम गांव का प्रधान चुना जाता है और समाज में इज्जत पता है। एक दलित समाज के व्यक्ति का आरक्षण के बगैर सरपंच बनना संभव नहीं था, क्योंकि सारी ताकत, और सत्ता उच्च वर्ग के पास थी। राधिकारमण प्रसाद सिंह के अभिनंदन ग्रंथ में एक लेख है, जिसके लेखक हैं प्रेम नारायण टंडन, जिस लेख का शीर्षक है-राजा साहब के नाटक' । इस लेख में टंडन जी लिखते हैं कि " नज़र बदली-बदल गए नजारे' के नायक जमींदार रायबहादुर ठाकुर सरदार सिंह उन सब दोषों से मुक्त दिखाए गए हैं, जिनके लिए सामंत वर्ग दोषी था, और जिनसे प्रजा को मुक्त करने के लिए जमींदारी प्रथा का अंत किया गया, विलास प्रियता उनमें थोड़ी बहुत आवश्य थी।" 5 लेखक को ठाकुर साहब सामंती दोषों से मुक्त नज़र आ रहे हैं , पर कोई रचना किसी एक व्यक्ति के बारे में तो लिखी नहीं जाती है, रचना में व्यक्ति तो होता है, पर वह व्यक्ति पूरे समाज और अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यहां पर टंडन जी की बात से सहमत नहीं हुआ जा सकता है। यदि उस दौर के सभी सामंत और जमींदार

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(3), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

दोष मुक्त होते तो राधिकारमण को इस विषय पर नाटक लिखने की जरूरत नहीं पड़ती। जमींदारी प्रथा समाप्त करने के लिए कानून नहीं बनाने पड़ते। यह समाज का सच था कि आजादी से पहले और बाद में भी भारत में सामंती व्यवस्था थी। जिसमें दलित , पिछड़े, गरीब, मजदूर पिसते रहते थे। आजादी के 75 वर्षों बाद भी देश में यह व्यवस्था है। जहां दलितों और पिछड़ों का शोषण होता है। यह राधिकारमण प्रसाद सिंह की दूर दृष्टि थी, जिसे उन्होंने पहचान लिया था, वह पहचान रहे थे कि आने वाला समय बराबरी का समय होगा। चाहे वह देवराम हो या ठाकुर सरदार सिंह सभी को समाज में बराबर हक मिलेगा, ना कोई बड़ा होगा ना कोई छोटा । जाति और धर्म के नाम पर भेदभाव नहीं किया जा सकता है । जाति के नाम पर किसी का शोषण नहीं किया जा सकता है। हमारे संविधान ने हर व्यक्ति को समान मौलिक अधिकार दिया है।

इस प्रकार इस नाटक के माध्यम से हम देख सकते हैं कि राधिकारमण प्रसाद सिंह जी ने सदियों पुरानी सामंतवादी व्यवस्था को टूटते हुए दिखाया है। दलित, पिछड़ा, आदिवासी, उपेक्षित, वंचित वर्ग समाज में आगे आ रहा है और इज्जत की जिंदगी जी रहा है। लेकिन यह आज भी समाज में बहुत बड़े बदलाव की जरूरत है। राधिकारमण प्रसाद सिंह द्वारा लिखित चारों नाटकों का अवलोकन करें तो सभी नाटक अपने उद्देश्य में सफल हैं। समाज की उन्हीं समस्याओं को संजीदगी से चित्रित किया गया है जिससे तत्कालीन समाज पीड़ित था। राजा साहब भले ही प्रेमचंद या जयशंकर प्रसाद की तरह हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध न पा सकें हों, लेकिन उनकी रचनाएं समाज से टकराती रही हैं। और समाज के सच को दिखाती हैं। अपने वाले समय में हिन्दी समाज जरुर राधिकारमण प्रसाद सिंह को पढ़ेगा और राजा जी को स्वीकार करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1नाटक की भूमिका, यह पुनर्जन्म, राधिका रमण ग्रंथावली, खण्ड -5, पृष्ठ संख्या -3

2- नये रिफार्मर - पृष्ठ संख्या - 8

3-नये रिफार्मर - पृष्ठ संख्या - 9

4- नज़र बदली बदल गए नजारे', पृष्ठ संख्या -21

5- अभिनंदन ग्रंथ -डा प्रेम नारायण टंडन, राजा साहब के नाटक , पृष्ठ संख्या - 89

डॉ रमेश यादव, प्रवक्ता हिन्दी,

राजकीय डिग्री कॉलेज (आटोनामस)

कड़पा , आंध्र प्रदेश